www.krishipravahika.com

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 2, 45-46

Article ID: 169

स्ट्रॉबेरी की उन्नत खेती

रिंकू रानी, जीत राम शर्मा, प्रिंस[1], अन्नु, चित्रलेखा[1]

उद्यान विभाग, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विशवविद्यालय हिसार

[1]कपास अनुसन्धान केंद्र, सिरसा, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विशवविद्यालय हिसार-125004

स्ट्रॉबेरी एक बहुत ही महत्वपूर्ण फल है। इसका पौधा कुछ ही महीनों में फल दे देता है। स्ट्रॉबेरी अपने रंग, रूप एंव स्वाद के लिए बहुत ही लोकप्रिय है। इन्ही कारणों से स्ट्रॉबेरी की खेती कम समय में अधिक उपज पाने तथा मुनाफे की खेती के रूप मे अधिक तेजी से फैल रही है। स्ट्रॉबेरी का फल बहुत ही नाजुक तथा खाने में हल्का मीठा व हल्का खट्टी होता है। इसका रंग चटक लाल है। स्ट्राबेरी के फल में काफी मात्रा में विटामिन सी, विटामिन ए, विटामिन के पाया जाता है। इनके अतिरिक्त इसमें केल्सियम एंव मैग्नीशियम भी होता है।

जलवायु एंव भुमि:-

स्ट्रॉबेरी की खेती विभिन्न प्रकार की जलवायु तथा भुमि में की जा सकती है। वैसे अच्छी फसल लेने के लिए बलुई दोमट मिट्टी, जिसकी पी. एच 5.6ण्5 हो तो उचित माना जाता है। इसके फूलों एवं फलों को पाले से बचाने की जरूरत होती है। भूमि में निकासी का प्रबंध अच्छा होना चाहिए।

स्ट्रॉबेरी की प्रमुख किस्में:-

स्ट्रॉबेरी की अधिकतर किस्में बाहर से मंगवाई गई है। व्यावसायिक तौर से खेती करने के लिए मुख्यत किस्में निम्नलिखित है-

चैडलर:

यह किस्म कैलीफोर्निया में विकसित की गई है। इसका फल बहुत ही आकर्षित होता है, परन्तु इसके फल की त्वचा नाजुक होती है। इसका उत्पादन विभिन्न स्थितियों में किया जा सकता है।

स्वीट चार्ली:

इस किस्म में कई फफूंद रोगों के प्रति रोधक शक्ति है एंव यह किस्म फल भी जल्दी देती है। इसका फल मीठा होता है।

ओफरा:-

यह किस्म इजराईल की है। यह अगेती किस्म है।

कैमारोजा:-

कैलीफोर्निया की किस्म है। इसके फल का आकार बड़ा होता है तथा इसका फल मजबूत होता हैै। कैमारोजा का पौधा लम्बे समय तक फल देता है। यह किस्म वायरस रोगों के प्रति रोधक है।

ओसो ग्रेन्ड:-

यह भी कैलीफोर्निया की किस्म है। यह किस्म छोटे दिनों में फल देती है। इसका फल बड़ा होता है परन्तु इसके फल में फटने की समस्या होती है। यह किस्म बहुत अधिक मात्रा मे रनर उत्पादन करती है।

पौध लगाना:-

स्ट्रॉबेरी के पौधों को ऊपर उठी हुई क्यारियों में लगाया जाता है। क्यारियों की उंचाई 25 सेंटीमीटर तथा चैड़ाई 105-110 सेंटीमीटर रखी जाती है। क्यारियों में पौधों को चार पंक्तियों में लगाया जाता है। पंक्तियों के बीच में 25 सेटीमीटर दूरी तथा पौधे की आपसी दुरी 25-30 सेंटीमीटर रखनी चाहिए एंव दो क्यारियों के बीच की दुरी 55 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। पौधों की रोपाई 10 सितम्बर से 10 अक्तूबर तक कर देनी चाहिए। यदि सितम्बर माह में शुरू के दिनों में तानमान अधिक हो तो पौधो की रोपाई को 20 सितम्बर तक शुरू किया जा सकता है।

देख-रेख:

खाद तथा उर्वरक:-

खाद व उर्वरकों की मात्रा मिट्टी की जांच के आधार पर तय की जानी चाहिए। साधारण तौर पर रेतीली भूमि में 10-15 टन अच्छे से तैयार की खाद प्रति एकड़ के हिसाब से खेत तैयार करते समय डाले और मिट्टी में अच्छे से मिला ले। उसी समय 100 किलोग्राम फास्फोरस तथा 60 किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ के हिसाब से डालें। पौधे लगाने के बाद उर्वरकों को टपका सिंचाई के द्वारा दिया

जाना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि उपयोग किए जाने वाले उर्वरक पानी धुलनशीन हो। और सुक्ष्म तत्वों को पौधों पर छिड़काव के द्वारा दिया जाना चाहिए।

समय	(ग्राम / एकड़ / दिन)		
	नाइट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश
10 अक्तूबर से 20 नवम्बर तक	250	200	400
21 नवम्बर से 20 दिसम्बर तक	600	200	600
21 दिसम्बर से 20जनवरी तक	250	160	600
21 जनवरी से 28 फरवरी तक	700	200	900
1 मार्च से 31 मार्च तक	600	200	900

फल–फूल–सब्जी उत्पादन एंव परिक्षण सामग्री सिफारिशें

सिंचाई:

सिचाई के लिए बिना नमक का एवं उत्तम गुणवता का पानी उपयोग मे लेना चाहिए। पौधे लगाने के तुरन्त बाद ही पानी दे। सिंचाई के लिए सूक्ष्म फव्वारों का उपयोग करें। तथा जैसे ही फल आने शुरू हो जाए, सुक्ष्म फव्वारों की जगह टपका विधि द्वारा सिंचाई करें। सुक्ष्म फव्वारों का उपयोग करते समय सावधानी रखे कि पौधा स्वस्थ तथा फंफूद रोग रहित हो।

मल्चिंग:-

फूल आने पर मंल्चिग करना आवश्यक है जिससे फलों को सड़ने से बचाया तथा खरपतवारों पर नियंन्नण किया जा सकता है। मंल्चिग काले रंग की पोलिथीन जोकि 50 माइक्रोन की मोटाई वाली हो, से की जाती है। मंल्चिग करने से पानी की मान्ना बनी रहित है क्योंकि मंल्चिग भूमि से पानी के वाष्पीकरण को रोकता है।

पाले से बचाव:-

पौधों को पाले से बचाने के लिए ऊपर उठी हुई क्यारियों को बांस की इंडिया अथवा लोहे की तार से बने हुए हुक्स के उपयोग से 100-200 माइक्रोन मोटा पारदर्शी चद्र से ढ़कना चाहिए। सुर्यास्त से पहले क्यारियों को ढक दें तथा सुर्यादय के बाद चद्र हटा दे।

- इन रखरखाव की विधियों के उपयोग से एक पौधे से 200-300 ग्राम रोग रहित फलों का उत्पादन किया जा सकता है। रोग रहित तथा अच्छे आकार के होने के कारण मण्डी में भी बहत अच्छे धाम मिल जाते है। फलों की तुडाई शाम के समय करनी चाहिए तथा तुरन्त मण्डी भेजना चाहिए।